Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A - Part I Paper - II
Metaphysics and Epistemology

Notes

GRB BOOKS

"Monism"
(एकात्मवाद / एकवाद)

'एकवाद' वह तत्वशास्त्रीय सिद्धान्त है जो मूल तत्व की संख्या को एक मानता है। इसके अनुसार विश्व की आधारभूत सत्ता एक है और जो बहुलता यहाँ दीखती है वह परमार्थ नहीं है।

संख्या-विषयक सिद्धान्तों में एकवाद अनेकवाद और द्वैतवाद का विरोधी है। प्रकृति-विषयक सिद्धान्तों में किसी के साथ एकवाद का कोई स्वभावगत विरोध नहीं है।

'एकवाद' मूल तत्व की संख्या को एक मानता है, परन्तु उसकी प्रकृति को लेकर एकवादियों में मतभेद है। एक वर्ग के विचारक मानते हैं कि मूल तत्व की संख्या एक है किन्तु प्रकृति अनेकात्मक है, इस मत को अनेकात्मक एकवाद कहा जाता है दूसरे वर्ग के विचारकों के अनुसार मूल तत्व की संख्या और प्रकृति दोनों एकात्मक हैं अर्थात वह एक ही गुण या धर्म वाला एक पदार्थ है प्रकृति को एकात्मक मानने वालों के अन्तर्गत दो दल हो जाते हैं एक उसे केवल भौतिक मानता है और दूसरा केवल आध्यात्मिक पहले को भौतिकवादी एकवाद और दूसरे को प्रत्ययवादी एकवाद कहा जाता है। इस प्रकार एकवाद के तीन भेद हो जाते हैं —

1. अनेकात्मक एकवाद।
2. भौतिकवादी एकवाद।
3. प्रत्ययवादी एकवाद।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

पाश्चात्य एकवाद — 1. अनेकात्मक एकवाद - इस मत का बड़ा सुन्दर उदाहरण स्पीनोजा के दर्शन में मिलता है। मूलतत्व के लिए उन्होंने 'द्रव्य' शब्द का प्रयोग किया है। इनके अनुसार द्रव्य एक है और वही परमार्थ सत्ता का अधिकारी है। वह स्वयंभू तथा असीम है। किन्तु संख्या में एक होते हुए भी इसकी प्रकृति अनेकात्मक है क्योंकि वह अनन्त धर्मों से युक्त है धर्म उसे कहते हैं जो मानवीय बुद्धि के लिए द्रव्य का सार तत्व या उसकी प्रकृति का द्योतक है। इसलिए अनन्त धर्मों का अधिष्ठान होने के कारण द्रव्य की प्रकृति को एकात्मक नहीं कहा जा सकता। किन्तु उसके अनेक धर्मों से सिर्फ दो ही का ज्ञान मनुष्य को होता है वे दो हैं विचार और विस्तार इसका मतलब है कि मूल द्रव्य विचारवान और विस्तृत अर्थात चेतन और जड़ दोनों है। इसी द्रव्य को स्पीनोजा ईश्वर भी मानते हैं।

2. भौतिकवादी एकवाद — इसका उदाहरण प्राचीन यूनानी दार्शनिकों के सिद्धान्तों में मिलता है। थेलिस, एनेक्जिमेनीज और हेराक्लीटस इसके प्रमुख समर्थक हैं। थेलिस के अनुसार जल एनाक्जिमेनीज के अनुसार वायु और

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes GRB BOOKS

हेराक्लीटस के अनुसार अग्नि मूलतत्व है ये तीनों विचारक एकवादी हैं क्योंकि मूलतत्व की संख्या एक मानते हैं और भौतिकवादी हैं क्योंकि इसकी प्रकृति को भौतिकवादी हैं क्योंकि इसकी प्रकृति को भौतिक कहते हैं।

3. प्रत्ययवादी एकवाद-

प्रत्ययवादी एकवाद का स्पष्ट उदाहरण फिक्टे, शैलिंग, हीगल शोपेनहावर तथा कुछ आधुनिक प्रत्ययवादियों के दर्शन में मिलता है। इस परम्परा के सभी विचारक ये मानते हैं कि परमार्थ सत्ता एक है और इसकी प्रकृति पूर्णतः आध्यात्मिक है। हीगल के लिए मूल तत्व बुद्धि है जो निरपेक्ष और सर्वव्यापक है वह एक है किन्तु इसकी एकता सरल या अमूर्त नहीं बल्कि मूर्त है। बुद्धि की एकता को अनेक पदार्थों के रूप में अभिव्यक्त होने की शक्ति से उत्पन्न मानने के कारण हीगल के एकवाद को मूर्त एकवाद की संज्ञा दी जाती है।

शोपेनहावर का मत है कि मूलतत्व आध्यात्मिक है और एक है किन्तु उसे व बौद्धिक न हो बल्कि संकल्पात्मक मानते हैं। इनके अनुसार परम सत्ता एक निरपेक्ष संकल्प-शक्ति है ससीम आत्माएं तथा विश्व के भौतिक पदार्थ सभी इसी की अभिव्यक्ति हैं। अपने आप में वह एक है किन्तु अनन्त पदार्थों के रूप में अपने को प्रकट करती है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

GRB BOOKS

पदार्थों की अनेकता पारमार्थिक नहीं है, क्योंकि सबके मूल में एक ही संकल्प शक्ति विद्यमान है।

आधुनिक प्रत्ययवादियों में ग्रीन, स्टर्लिंग, ब्रैडले आदि एकवाद के प्रमुख समर्थक हैं इनमें ब्रैडले का सिद्धान्त सबसे अधिक प्रौढ़ और विकसित है वे मानते हैं कि परमसत्ता पूर्णतः आध्यात्मिक वास्तव और अनन्त है जिसे वे एक सर्वव्यापक अनुभव की संज्ञा देते हैं।

भारतीय एकवाद :—

प्रत्ययवादी एकवाद भारतीय दर्शन में अनेकात्मक और भौतिकवादी एकवाद का असंदिग्ध उदाहरण नहीं है किन्तु प्रत्ययवादी एकवाद का अत्यन्त ही सुविकसित उदाहरण शंकर के अद्वैतवाद में मिलता है। इनके अनुसार परमतत्व ब्रह्म है जो पूर्णतः एक और आध्यात्मिक है। इसमें किसी प्रकार का अनेकत्व नहीं है। वस्तुतः अनेकता मिथ्या है वह सत्य नहीं बल्कि प्रतीति है और यह प्रतीति अज्ञान के कारण होती है। शंकर के एकवाद को निर्गुण की संज्ञा दी जाती है क्योंकि परमसत्ता को वे विशुद्ध इकाई अर्थात् अनेकता से पूर्णतः रिक्त मानते हैं। एकवाद की यह पराकाष्ठा है क्योंकि यहाँ सिर्फ एक अर्थात् ब्रह्म को सत्य

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

माना जाता है और अनेकता का बिल्कुल बहिष्कार होता है।

आधुनिक भारतीय दार्शनिकों में स्वामी विवेकानन्द, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, सर्वपल्ली राधाकृष्णन आदि प्रत्ययवादी एकवाद का समर्थन करते हैं। राधाकृष्णन मानते हैं कि परमसत्ता निरपेक्ष आत्मा है जो एक सर्वव्यापक और स्वतंत्र है। अपने को अनन्त रूपों में व्यक्त करने की शक्ति इसमें विद्यमान है। विश्व इसकी केवल एक अभिव्यक्ति है। इसलिए विश्व में वह समाप्त नहीं है। चूंकि विश्व इसी की अभिव्यक्ति है जो परमार्थ तत्व है, विश्व को मिथ्या या भ्रम नहीं कहा जा सकता। बल्कि वह वास्तविक है। परम आत्मा की अभिव्यक्ति के भिन्न-भिन्न रूप होते हैं। वे यों हैं: जड़, जीव, चेतन तथा आत्म-चेतन। जड़ सबसे कम विकसित है, इससे अधिक जीव, जीव से अधिक चेतन और चेतन से अधिक विकसित आत्म-चेतन है।

एकवाद के समर्थन में अनेक युक्तियाँ दी गयी हैं।

1. मूल तत्व की परिभाषा करते हुए स्पीनोजा कहते हैं कि वही पदार्थ परमार्थ सत्ता का अधिकारी हो सकता है जो किसी दूसरे पदार्थ पर निर्भर नहीं करता है, अर्थात् जो अपने कार्य-तत्व का स्वयं कारण हो। ऐसा पदार्थ संख्या में एक ही

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

हो सकता है क्योंकि यदि हम दो को सत्य मानते हैं तो दोनों एक दूसरे को सीमित करेगा और एक दूसरे पर निर्भर करेगा वह परमार्थ नहीं हो सकता। अतः मूलतत्व एक ही है क्योंकि इसे एक से अधिक मानने पर इसकी परमार्थता नष्ट हो जाती है।

2. हीगल तथा इनसे प्रभावित कुछ आधुनिक प्रत्ययवादी विचारक परम तत्व का तार्किक विश्लेषण कर इसकी एकता स्थापित करते हैं। इनका कहना है कि वह अवश्य ही सर्वव्यापक होगा क्योंकि वह सारे विश्व का आधार है और जो सर्वव्यापक होगा वह अवश्य एक ही होगा क्योंकि दो सर्वव्यापक पदार्थों की कल्पना विरोधपूर्ण है। इसलिए परम तत्व को एक मानना ही पड़ेगा। नहीं तो वह सर्वव्यापक नहीं कहा जा सकेगा। जो उसकी परमार्थता के लिए अनिवार्य है।

3. मूलतत्व की एकता के लिए शंकर का तर्क भी बड़ा सुन्दर है। हमने देखा है कि इनके अनुसार मूलतत्व शुद्ध सत्ता है जो किसी विशेष पदार्थ की सत्ता नहीं बल्कि सत्ता मात्र है। इसकी संख्या एक है। पदार्थों में पारस्परिक भिन्नता है किन्तु इनके मूल में एक ही सत्ता विद्यमान है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

4. रहस्यवादी दार्शनिक — रहस्यात्मक अनुभूति के आधार पर मूलतत्व की एकता प्रमाणित करते हैं। इनका कहना है कि परमसत्ता का यथार्थ ज्ञान अपरोक्ष आध्यात्मिक अनुभूति में होता है और इसका निर्णय है कि वह एक है। इसतरह की अभिव्यक्ति उपनिषदों में प्राय: मिलती है। शंकर तथा आधुनिक भारतीय प्रत्ययवादी जैसे रविन्द्रनाथ ठाकुर, राधाकृष्णन आदि यद्यपि बौद्धिक विवेचन द्वारा मूलतत्व की एकता प्रमाणित करते हैं किन्तु वे भी अपरोक्षानुभूति को ही यथार्थ ज्ञान का सर्वश्रेष्ठ साधन मानते हैं। पाश्चात्य दर्शन में प्लोटिनस ने रहस्यात्मक अनुभूति के आधार पर परम सत्ता की एकता स्वीकार की है।

एकवाद की आलोचनाएँ भी की गई हैं जो इसप्रकार हैं—

1. पाश्चात्य दर्शन में मूलतत्व की एकता स्वीकार करके विश्व की अनेकता की समुचित व्याख्या कोई भी विचारक नहीं दे सका है। यदि मूलतत्व एक है तो सभी पदार्थों की व्याख्या हो जानी चाहिए अन्यथा संसार का मूल आधार होने का गौरव उसे नहीं दिया जा सकता। इसलिए एकवाद सफल सिद्धान्त नहीं है।

2. एकवाद की दूसरी दुर्बलता है कि वह परिवर्तन की व्याख्या नहीं

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

GRB BOOKS

कर सकता है। विश्व के पदार्थ क्षण-क्षण परिवर्तित होते रहते हैं। किन्तु विश्व को मूलतः एक मानने पर परिवर्तन असम्भव हो जाता है। किन्तु जब विश्व का मूल आधार ही स्थिर है तो विश्व के पदार्थों में परिवर्तन संभव नहीं है। किंतु अनुभव परिवर्तन का होता है। इसलिए परिवर्तन को असम्भव नहीं कहा जा सकता क्योंकि असंभव की अनुभूति भी असंभव हो जायगी। इस कठिनाई को दूर करने के लिए कुछ एकवादी परिवर्तन को असत्य मानते हैं किन्तु इसे असत्य मानने पर प्रगति या विकास भी असत्य हो जाते हैं क्योंकि प्रगति में नीचे से ऊपर की ओर परिवर्तन होता है, जो असम्भव है वह सम्भव होता है। किन्तु प्रगति को असत्य करार करना सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से अग्राह्य है सैद्धान्तिक दृष्टि से इसलिए कि विश्व का इतिहास प्रगति की सत्यता प्रमाणित करता है और व्यावहारिक दृष्टि से इसलिए कि इसे असत्य मानने पर जीने के लिए कोई प्रेरणा नहीं रह जाती है। जब प्रगति ही असत्य है तो प्रयत्न बेकार है और प्रयत्नों के अभाव में मनुष्य निष्क्रिय हो जाता है।

3. व्यक्तित्व और व्यक्ति स्वातंत्र्य की व्याख्या

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

भी एकवाद से नहीं होती है। हम सभी यह अनुभव करते हैं कि हमारे अन्दर अपना-अपना व्यक्तित्व है और एक का व्यक्तित्व दूसरे से भिन्न है। किन्तु यदि हम विश्व के मूल आधार को एक मानते हैं तो हमारा व्यक्तित्व नष्ट हो जाता है क्योंकि जब मूल सत्ता एक है तो अनेक व्यक्तियों का अस्तित्व सम्भव नहीं है। इसी तथ्य को यह कहकर एकवादी विचारक व्यक्त करते हैं कि भिन्न-भिन्न व्यक्ति मूल सत्ता के विकार या प्रपञ्च मात्र हैं। एकवादी दर्शन में सागर में बूँदों की तरह परम सत्ता में विभिन्न व्यक्तियों का अस्तित्व खो जाता है। व्यक्तित्व के विनाश के साथ व्यक्ति स्वातंत्र्य का भी नाश स्वाभाविक है। जब व्यक्ति ही नहीं है तो उसकी स्वतंत्र क्रिया-शक्ति ही कैसे सम्भव हो सकती है? किन्तु व्यक्ति-स्वातंत्र्य के अभाव में नैतिक आचरण निरर्थक हो जाता है। किन्तु नैतिक आचरण को अर्थहीन कर देने से सामाजिक संगठन नहीं टिक सकता है। इस हालत में न तो चोर को दंडित करने के लिए ही कोई कारण है, न समाज सेवी को पुरस्कृत करने के लिए, क्योंकि दोनों में किसी के अन्दर भी व्यक्ति-स्वातंत्र्य अर्थात् कार्य करने की स्वतंत्रता विद्यमान नहीं है।

4. एकवाद में दुख और अशुभ की व्याख्या की क्षमता भी नहीं है। यदि दुःख और अशुभ मूलतत्व के अंग हैं तो ये भी परमार्थ हो जायेगा।

सुगम पास-बुक
A NEW APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes

यदि ये मूलतत्व के अन्दर नहीं है तो इनकी उत्पत्ति कैसे होती है?
इस प्रश्न का कोई समुचित उत्तर एकवाद के किसी भी पाश्चात्य समर्थक के दर्शन में नहीं मिलता। किन्तु जब हम भारतीय एकवाद की ओर देखते हैं तो पाते हैं कि शंकर का अद्वैतवाद उक्त दोषों से मुक्त है और विश्व की व्याख्या करने में सफल है। शंकर मानते हैं कि मूलतत्व ब्रह्म है जो शुद्ध इकाई है। अनुभूत अनेकता तथा परिवर्तन, दुःख, अशुभ, वैयक्तिक विभिन्नता आदि को वे स्वीकार करते हैं किन्तु उन्हें सत्य नहीं बल्कि प्रतीति भर मानते हैं। वे सत्य नहीं हैं क्योंकि उनमें सत्य होने के लक्षण अर्थात् सार्वभौमता और चिरन्तनता नहीं है। यहाँ यही प्रश्न है कि उनकी प्रतीति क्यों होती है? इसके लिए शंकर का उत्तर है कि इसका कारण अज्ञान या माया है, माया को स्वीकार करने से कुछ लोग आक्षेप करते हैं कि तब तो ब्रह्म और माया दो परम तत्व हो जाते हैं। किन्तु यह आक्षेप गलत है क्योंकि माया परमार्थ नहीं है। वह तो अज्ञानस्वरूप है इसलिए ज्ञान द्वारा उसका नाश निश्चित है। अतः वह नाशवान है और जो नाशवान है वह परमार्थ नहीं हो सकता। इस प्रकार ब्रह्म की एकमात्र सत्ता है। संसार के प्राणियों के अन्दर जो आत्मा है

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM

Notes
GRB BOOKS

वह भी अपने शुद्ध रूप में ब्रह्म ही है, केवल अज्ञान का पर्दा पड़ जाने से आत्मा अनेक लगता है और कई दोषों से युक्त मालूम पड़ता है। इस पर्दा के हटते ही वह अपने मौलिक रूप को प्राप्त करता है। आत्मा और ब्रह्म की एकता सिद्ध कर शंकर का दर्शन आशावाद का संचार करता है। जब आत्मा ही ब्रह्म है तो ब्रह्म का सारा ऐश्वर्य आत्मा का ही है। आशावाद के लिए इससे बढ़कर दूसरा आधार क्या हो सकता है इस प्रकार हमारा निष्कर्ष है कि शंकर का अद्वैतवाद या प्रत्ययवादी एकवाद सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से सर्वश्रेष्ठ है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS IN U.P. BOARD EXAM